पुष्करराज भट्ट

ई—मेल-pushkarbhatta44@gmail.com

दिव्यांगता

कार्यालय के बाहर लम्बी लाइन थी । इसी बीच लाइन में एक दिव्यांग व्यक्ति वहाँ पहुँचा । वह अन्दर जाने का प्रयास करने लगा । वहाँ खड़े लोगोँ ने उसको रोकने का प्रयास किया ।

"आप अन्दर नहीँ जा सकते ।" एक आदमी बोला ।

"क्यों?" उसने जवाब दिया ।

"हम इतने आदमी यहाँ लाइन में खड़े हैं । तुम क्यों अन्दर जा रहे हो?" सारे आदमी आक्रोश व्यक्त करने लगे।

उसने कुछ जवाब नहीँ दिया । सुरक्षाकर्मी उसको अन्दर ले गया ।

"सुरक्षाकर्मी का अपना आदमी होगा, इसिलिए अन्दर पहुँचा रहा है । यहाँ भी धाँधली है ।" लाइन में पीछे खड़े आदमी ने कहा ।

"वही तो । सीधे-साधे आदमी हर जगह ठगे जाते हैं ।" दूसरे आदमी ने सनातन पीड़ा उजागर की।

लोगों को साक्षात्कार के लिए अन्दर बुलाया जाने लगा । क्रमशः नाम पुकारा गया ।

पहले सबसे ज्यादा आक्रोशित होनेवाले आदमी का ही नाम लिया गया । वह अन्दर गया । उसने साक्षात्कार लेने वाले आदमी का चेहरा देखा । वही दिव्यांग आदमी साक्षात्कारकर्त्ता के रुप में बैठा था ।

उसने हाथ जोड़कर कहा, "आपको पहचान नहीँ पाया सर । माफी चाहता हूँ ।"

"मुझे कोई परेशानी नहीं है भाई । संसारभर की पीड़ाओं को अपने अन्दर समेटकर ही मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ ।"

दिव्यांग कार्यालय प्रमुख की आवाज के साथ ही उसके चेहरे का भाव परिवर्तन हुआ ।

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

काठमाडौं, नेपाल के रहने वाले डा. पुष्करराज भट्ट नेपाली लघुकथा के प्रथम दर्शनाचार्य, प्रथम विद्यावारिधि उपाधि प्राप्त लेखक, समालोचक एवं अनुवादक हैं । उनके लघुकथा के सृजनात्मक ५, समालोचनात्मक १, अनुवाद २, सम्पादन २ ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान में वह भाषा आयोग के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं ।